* ओ३म् *

अपने पाँवों आप कुल्हाड़ी

जबतक बुरी बातें नहीं छोड़ते और अच्छी बातें नहीं करते तब तक बढ़ती के बदले हानि होती है स०प्र० २८०

स्वा० दयानन्द

लेखक—प० बिहारीलाल शर्म्मा

प्रकाशक—

आर्योपप्रतिनिधि सभा

जिला बिजनौर।

—-*—-

श्रीयुत ला० मुन्नालालजी बिजारखाता निवासी के पुत्र म० जितेन्द्रनाथ के विवाह में मिले दाम से छपी।

—:०:—

प० लखीराम शर्मा के प्रबन्ध से

शर्मा मैशीन प्रिंटिंग प्रेस, मुरादाबाद में छापा।

प्रथमबार १०००

* ओ३म् *

आज कल चारों ओर से हाय हाय की यह आवाज़ आ रही है कि भारतवर्ष (हिन्दुस्तान) की हालत ख़राब है अकाल (क़हत) बीमारियाँ और मंहगी के मारे देश पिसा जा रहा है कोई इसका दोष सरकार पर देकर दुन्द मचाता है कोई कलियुग और भाग को दोष देकर चुप हो बैठता है मगर भाइयों सच पूछो तो सब दोष हमारा अपना ही है दूसरों से शिकायत न करके अगर हम अपने को संभालें तो सारा संकट दूर होजाय अफसोस की बात है कि हम अपने दुःखों की शिकायत उनसे करते हैं जिन्हें हम ग़ैर और अपना वैरी समझते हैं। प्यारे भाइयो ! बाहिर निगाह न दौड़ा कर पहिले अपने भीतर तो टटोलो कि भीतरी रोग क्या है अपना ज़ख्म ठीक करो मक्खियां अपने आप भाग जायेंगी अगर हमारे शरीर में मवाद मौजूद है तो मक्खियां काटेंगी ही। अब देखिये कि हम किस तरह अपना बिगाड़ आपही कर रहे हैं अपने पांवों में हमारा मुल्क आप कुल्हाड़ी मार रहा है कुकर्म और बुरी आदतों की कुल्हाड़ी से अपनी तरक्की का पांव भारतवर्ष रात दिन काट रहा है इस मुल्क की आमदनी का सालाना औसत प्रति मनुष्य १५) का ही है रात दिन काल पड़े रहते हैं सिर्फ २५ वर्षों में १८ अकाल पड़ चुके हैं जिनसे २ करोड़ मनुष्य मरे ४ करोड़ आदमी

खाली पेट सोते हैं मगर बुरी आदतों की यह हालत है कि सिर्फ नशों में जो खर्च होता है उसे देखकर हैरानी होती है देखिए नशों की कैसी तरक्की होरही है ।

महकमें आबकारी की रिपोर्ट से पता लगता है कि हर सन् शराब की तरक्की दिनों दिन इस तरह पर हो रही है:—

सन् १८७८ में २ करोड़ २७ लाख रुपया
सन् १८८२ में ४ करोड़ ४७ लाख ,,
सन् १८९३ में ५ करोड़ १० लाख ,,
सन् १९०५ में ८ करोड़ ६८ लाख ,,
सन् १९११ में ११ करोड़ ५० लाख ,,
सन् १९१७ में १६ करोड़ ४७ लाख ,,

शराबखोरी ने इस मुल्क को बरबाद किया आप ग़ौर से देखिये नम्बरवार शराब की तरक्क़ी हो रही है यह विलायती शराब का खर्च है अब देशी का हाल सुनिये सन् १९१७ में ही ९ करोड़ का देशी शराब और १॥ करोड़ का चोरी से खिंचा शराब इस मुल्क में खर्च हुआ है यह मोटी २ रक़में लिखदी गई हैं हज़ार सैकड़े छोड़ दिये हैं और मुल्कों में सिर्फ सिगरट और शराब का खर्च है मगर यह भुक्कड़ भारतवर्ष जो दुनियां में सब से ज्यादा गरीब है २७ करोड़ रुपया

शराब में बरबाद करने के अलावा १४ करोड़ रुपया भांग सुलफ़ा अफीम पोश्त मदक आदि फूंकता है ५ करोड़ का बीड़ी सिगरट सिगार और खाने का तमाखू विलायतों से मंगाकर पीता खाता है और यहां का तमाखू जोकि १२ लाख एकड़ ज़मीन में पैदा होता है अगर इतनी ज़मीन में गेहूं बोया जाय तो ११ करोड़ रुपया साल का हो इस तरह ५७ करोड़ रुपया यह मुल्क ऐसे काम में फूँकता है कि जिससे शरीर का नाश बीमारियां बुद्धि का नाश पागलपन और धर्म और ईमान ग़ारत होता है।

प्यारे भाइयों अगर नरक से और ग़ुलामी से बचना चाहते हो या तुम्हें अपनी औलाद पर ज़रा भी रहम है तो इन बुराइयों को दूर करदो इन बुराइयों से मुल्क में कंगाली फैलती है आनेवाली औलाद बिगड़ती है लाखों यतीम (अनाथ) विधवा और कंगाल भूखों मर रहे हैं इस रुपये से उनकी परवरिश करो या विद्या-प्रचार में ख़र्च करो तो इस लोक में तन्दुरुस्ती और आज़ादी पाओगे और परलोक में स्वर्ग।

यह तो हुई नशोंकी हालत अब दूसरा कुकर्म व्यभिचार (ज़िनाकारी)को देखिये घरेलू दुराचारों के अलावा वेश्या-गमन (रंडीबाज़ी) इस क़दर बढ़ी हुई है कि मुल्क में ५

लाख ७४ हज़ार वेश्यायें हो गई हैं पहले नट नायक वादी क़ोमें इस पेशेको करतीं थीं, मगर अब भले २ घरों की बहू बेटियाँ रंडियाँ बनकर मुल्क का मुँह काला कर रही हैं बरमी, चीनी, यूरोपियन और यहूदी रंडियाँ भी इस मुल्क वालों के मुख पर स्याही फेरती हैं बड़े २ शहरों में यह भी ख़ासी तादाद में हैं इन रंडियों की आमदनी ६२ करोड़ सालाना रुपया है रंडीबाज़ी से हुए रोगों के इलाज की डाक्टरी फ़ीस २ करोड़ रुपया और दवाई का मूल्य १० करोड़ सालाना है वैद्य और हकीमों की फ़ीस और दवाई का मूल्य अलग है इस तरह ७४ करोड़ से ज्यादा रुपया इस पाप में फूँका जाता है जिस से वह लोक और परलोक दोनों बिगाड़ते हैं सदाचार और तन्दुरुस्ती को भारी धक्का पहुंचाने के अलावा मुल्क में बुरे आदमियों की तादाद बढ़कर कला-कौशल और धनका नाश होता है आलस बढ़कर गुलामी फैलती है, अब तीसरा नम्बर मुक़दमें बाज़ीका है मुक़दमेंबाज़ इन्साफ़ कराने के लिये कचहरी में नहीं जाते बल्कि वकीलों के फाँसे बनाकर जुआ खेलते हैं, इन्साफ़ तो अपने आत्मा में दोनों फ़रीक समझते हैं मगर इस उम्मीद में कि शायद हमारे ही सबूत का दाव चलजाय मुक़दमा लड़ाते हैं मन में जान रहे हैं,

कि यह वस्तु हमारी नहीं मगर सबूत दे रहे हैं अपनी होने का। अच्छी तरह आसामी जानता है कि मैंने रुपया क़र्ज़ लिया है मगर मियाद बीत गई फिर नहीं देगा, यही तो सरासर बेईमानी है आज कल ऐसे ही मुक़द्दमें रात दिन होरहे हैं झूंठ और मक्कारी की जीती जागती मूर्त्तियाँ देखनी होतो कचहरियों में चलेजाओ देखो मुक़द्दमेंबाज़ी में किस तरह रुपया फूंका जाता है सन् १६१६ की सरकारी रिपोर्ट से पता लगता है कि एक वर्ष में कुल दीवानी मुक़द्दमात् ३२ लाख ७४ हज़ार हुए इनका ख़र्च इस तरह पर है।

७ करोड़ कोर्ट फ़ीस ५ करोड़ वकील फ़ीस
६ करोड़ गवाह ख़र्च ३ करोड़ किराया
३ भेंट (रिश्वत) अहलकारान व चपरासी

कुल २४ करोड़ रुपया और १ लाख ८१ हज़ार फ़ौजदारी मुक़द्दमात का १५ करोड़ रुपया ३६ करोड़ रु० इस नाहक़ के जुए में बरबाद होता है बड़े बड़े हाकिमों की घूंस इससे अलग हैं अगर एक दूसरे का हक़ न दबाव बलवान निर्बलों को न सताये अमीर उदार और ग़रीब नम्र और मिहनती बने तो मुक़द्दमेंबाज़ी कभी नहो इसके अलावा और कुरीतियाँ भी सत्यानाश किये देती हैं देखो बालविवाह—इसके सबब लाखों छोटी छोटी राँडे हो गई हैं जो बड़ी होकर ज़्यादातर पापिनी ही बनेंगी।

जो सुहागिन भी हैं उनकी संतान अधिक मरती और वे रोगिणी रहती हैं या जल्दी ही मरजाती हैं बालविवाह के सबब नसलें कमजोर छोटी और रोगी बनी जारही हैं देश में प्रति ३ बच्चों में एक मरने का औसत बुड्ढों का विवाह-इससे व्यभिचार फैलता है औरतें पति को ज़हर देती और भागती हैं या आयुभर कष्ट भोगती रहती हैं रोगियों के विवाह-जन्म के कोढ़ी बवासीर वाले गर्मी वाले लड़के लड़कियों का विवाह होने से दोनों में रोगी बालकों की तादाद बढ़ती है दहेज़ या बदनी इसके सबब जोड़े ठीक नहीं मिलपाते अयोग्य जोड़े मिलते हैं जुआ-इससे चोरी मारपीट और सैकड़ों तरह के जुर्म और कष्ट बढ़ते हैं।

अगर आप अपने और अपने मुल्क के दुश्मन बनना नहीं चाहते तो—

१- हुक्का सिगरट, भंग, सुलफ़ा शराब आदि किसी प्रकार का भी नशा न करो और औरों को भी नशे से बचाओ और न जुआ खेलो।

२- स्वदेशी और सादा कपड़ा पहरो और अपनी सन्तान को भी शौक़ीनी से बचाओ।

३- अपनी सन्तान के आचरणों पर रातदिन निगाह रक्खो और रोज़ाना उनकी जाँचकरो अपने अछूत भाइयों से घृणा न करो न उन्हें सताओ विद्या सुशिक्षा और धर्मोपदेश से इनका सुधार करो।

४-किसी के भय या लालच से भी झूठी गवाही मत दो।

५- जिसे अन्याय पै समझो उसका साथ न दो।

६- मरजाओ मगर व्यभिचार मतकरो और औरों को रोको वेश्याओं को सुधारो या अपने से दूर करो।

७- बालविवाह और वृद्ध विवाह से आप बचो और दूसरों को भी करने से बचाओ।

आर्यसमाज-यह समाज आपके धर्मकर्म वेदशास्त्र और जाति की रक्षा के लिये गुरुकुल कन्या पाठशालायें और अनाथालय खोलकर बड़ा भारी उपकार कर रहा है इस ज़िले बिजनौर में ३० समाजें और हज़ारों आर्य पुरुष हैं इन आर्यसमाजों के संगठन से बनी हुई उपसभा है जोकि ज़िले भर में अपने उपदेशक भजनीकों से धर्मप्रचार कराती है और प्रचार से सैकड़ों स्त्री पुरुष सुधरते हैं विधर्मियों से हिन्दु जाति की रक्षा में यह सभा अपना सदा ध्यान रखती है आप भी अपने ग्राम में आर्य-समाज स्थापन कीजिये यदि आप चाहें प्रचार के लिये उपदेशक भजनीक यहां से भेजे जा सकते हैं जो कुछ पूछना हो इस पते पर पूछिये मिलना हो मिलिये कोई ईसाई मुसलमान शुद्ध होना चाहता हो या कोई अनाथ विधवा हो इस पते पर भेजिये।

बा० जगन्नाथशरण बी० ए० ऐल० ऐल० बी०

प्रधान उपसभा तथा आर्यसमाज बिजनौर।